उमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी.के. महिला कॉलेज
बक्सर (बिहार)

'रीढ़ की हड्डी' – जगदीशचन्द्र माथुर – उमा का चरित्र-चित्रण –

'रीढ़ की हड्डी' जगदीशचन्द्र माथुर की सुप्रसिद्ध एकांकी है। नायिका है उमा। उमा ब्याहने योग्य लड़की है। वह बी.ए. पास है। लेकिन उसके भीतर आधुनिक होने का भाव नहीं है। ऐसा लगता है कि कुछ लोग उमा को देख चुके है और तब भी शादी तय नहीं हुई है। इसका पता रामस्वरूप प्रसाद के व्यवहार से लगता है। उमा पढ़ी-लिखी लड़की अवश्य है लेकिन झूठे बनावटी व्यवहार का वह विरोध करती है। यही कारण है कि वह इसे भी मानने के लिए तैयार नहीं है कि शादी के लिए देखने आ रहे लोगों के सामने पाउडर लगाकर जाया जाय। रामस्वरूप प्रसाद अपनी पत्नी को समझाते हैं कि उमा पाउडर लगाकर आये। लेकिन पत्नी स्पष्ट शब्दों में कहती है, उमा इसके लिए तैयार नहीं है।

उमा भारतीय संस्कृति में पली लड़की है। वह पढ़ी-लिखी अवश्य है। लेकिन आजकल का भोंडापन उसमें नहीं है। वह झूठी बनावट का विरोध करती है लेकिन माता-पिता के वचन का पालन करने में वह पीछे नहीं रहती है। वह एक आदर्श भारतीय कन्या की तरह गोपाल प्रसाद और शंकर के सामने आती है। उसको देखकर वे दोनों खुश होते हैं।

उमा भारतीय कन्या है जिसके भीतर शिक्षा और जागृति का संचार हो रहा है। वह बी.ए. पास है लेकिन पिता की ओर से यह

सुझाव दिया गया है कि उन लोगों के सामने वह इंटेन्स की बात करे। उसमें इतनी शालीनता है कि वह सिर उठाकर गोपाल प्रसाद और शंकर को देखती भी नहीं है और जब देखती है तब पूरी कहानी ही बदल जाती है।

उमा संगीतप्रिय लड़की है। वह सितार बजाना और भजन गाना भी जानती है। देखने वाले की इच्छा पर वह सितार बजाती है और मीरा का भजन भी गाती है। उसमें भारतीय आदर्श भावना का संचार हो रहा है। ऐसा नहीं होता तो मीरा के भजन की जगह आज की फिल्मी दुनिया का मधुर गाना गा देती। इससे यह लगता है कि उमा के भीतर एक ठहराव की स्थिति भी है। उसके अबतक के व्यवहार से ऐसा ही लगता है। लेकिन जब उसका आन्तरिक तेज जागता है तब तो सारी स्थिति ही बदल जाती है।

उमा में आधुनिकता की जागृति है, क्योंकि वह पढ़ी-लिखी लड़की है। सितार बजाते-बजाते जब उसकी आँखे उठती है और शंकर को वह देखती है तब सारी स्थिति बदल जाती है। उमा का सितार बजाना एकाएक थम जाता है। कुछ पूछने पर भी वह चुप रहती है और जब बोलती है तब उसका बोलती ही बन्द कर देती है। वह साफ-साफ कहती है कि जब खरीदार कुर्सी-मेज से कुछ खरिदने जाता है तब वह कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता है। अगर पसंद हुआ तो खरीदी और नहीं तो छोड़ देता है। इतना ही नहीं, वह तेजस्वीनी आधुनिकता की तरह उन लोगों के सामने

पेश आती है। वह कहती है कि उनसे जरा पूछिए कि लड़कियों के दिल नहीं होते हैं क्या? उन्हें चोट लगती है या नहीं।

गोपाल प्रसाद जब गुस्से में आते हैं तब उमा भी अपना तेवर दिखा देती है। वह कहती है कि आप इतनी देर से मुझे माप-तौल रहे हैं, तो क्या इससे मेरी इज्जत नहीं जाती है? आप जरा अपने लड़के से पूछिए कि पिछली फरवरी में जनाब लड़कियों के हास्टल से किस तरह नौकरों का पैर पकड़कर भागे थे। उमा स्वीकार करती है कि वह बी.ए. तक पढ़ी-लिखी लड़की है। वह यह भी कहती है कि बी.ए. पास करना कोई पाप तो नहीं है। आप जरा अपने लड़के से पूछिएगा कि उनके पास रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं?

इस तरह हम देखते है कि उमा पढ़ी-लिखी लड़की है। उसमें भारतीय आदर्श और संस्कार का सामंजस्य हुआ है। वह अपनी भावनाओं को दबाना नहीं चाहती है। वह बी.ए. पास है। उसमें एक कलाकार की आत्मा संचार कर रही है। वह भावुक है। वह गोपाल प्रसाद को सब कुछ कह तो डालती है लेकिन फिर बाद में उसे रुलाई आ जाती है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उमा वास्तव में भारतीय संस्कार में जीती है।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज डुमरांव
बक्सर (बिहार)